

५ थोसपुस्तुनानकाल

श्रीगणेशायनमो श्रीरक्ष

श्रीगणेशायनमे।

II-277-1.

धर्मरत्न ब्रह्माचार्य सुरत श्री महाविहार

महाभारत पुराण

॥ श्रीहरीकिटकोनमः ॥ ॥ अथदात्रीगीयूजायाथाकथविधिः ॥ ॥ कृष्णाय नमः ॥
याज्ञाध्वजाय यंत्रगद्ययाजः कावा अययत्रयिनथाकथ ॥ इतगद्यस ॥ थापिंय ३ ॥ का
डंथखाऊला दथुसकय ॥ अयला खऊलापाऊडा सकय ॥ अकिथ्रटा २ यपाद
यासकय ॥ थकथाकयं लिवायः पूजाकसंकल्पयाय ॥ गुनमधुलदन यंत्र ॥ थ
काय यंत्रगद्यवियः सिद्धकयः म हनिदयः मधुलथिलः समाधियायः कृष्ण
यंत्रमललाध्वजा थापिंय ३ लंपूजामर्त्ताकथ ॥ थनंलि कावा अययत्रयूजा ॥ तावताक
थवाय ॥ कजासूकुलनागखन्यं अष्टदलयथाय त्रिषुकावनिर्कंकुसुसडंरुदयः

विटकात्रजं वपुषस्वरात्रं कथं ॥ थकवानानागवाय ॥ डंरुह्यकयं कात्रजं वाधिविरु
सनामृकं विराय ॥ थकवानाडा अष्टचउवाय ॥ डंरुह्य १ दाहीखेखादा ॥ स्नानमालानं
कखायक ॥ डंरुह्य १ खेवंहं ॥ डि काद्यवाय ॥ डंरुह्य १ वंरुसं धर्मदिया ॥ डंरु
मारुगावकमासकिअमृताकथ चहदिअमृकं यव ॥ ६ ॥ पाहुयागुकायः ग
वाय ॥ डंरुह्य १ ककामितिः सर्वर कक्षावतिगुमवजीनिका ॥ थध्वनी सर्वदि
यथायिनि ॥ १ ॥ २ ॥ ॥ हकात्रदविकवर्त्त ॥ १ ॥ कात्रगन्धनाशनं दीकाववीऊहकाव
अकात्रधामृताकावअमृकं यव ॥ १ ॥ दयानं ॥ १ ॥ मर्त्ताकथं पूजायाय ॥

पृथं चाशयाय वाक् ॥ उं वा नृधीय वरु पृथं पतिष्ठ स्वाहा ॥ उं मा मकीय वरु पृथं पतिष्ठ स्वाहा ॥
 ॥ उं ला वनीय वरु पृथं पतिष्ठ स्वाहा ॥ उं ये मिनीय वरु पृथं पतिष्ठ स्वाहा ॥ उं ता प्राय वरु पृ
 थं पतिष्ठ स्वाहा ॥ यं लां यं रुत ॥ ॥ ऊं च मां अकाला मुख ॥ दक्षिणा किय का सक
 य वाक् ॥ उं आहं हा ४ यथिका यम ॥ वयं कृता कृम रुत यं कथि ॥ वासां दा ३ यसा
 नृजा कजा किं न्याहं सद्यदि न गंध ॥ पृथं पृथं दीयं अकृतं ददा मिता आगदु २ सय मि
 वानस्य ॥ मित्स्वस्ति यं चिं कृ नृणीयं ॥ देवलिगृह कुरु स्वाद कुर्या वरु किय कुरु हं ३ रुट २ व
 रुच व आहय यतिष्ठ स्वाहा ॥ रुतिया य वाक् ॥ उं टिता रु कं कं समा वरु वाका व स स स

२
 पृथं च वके क क ग दित्या रुजा वरु द ॥ वितां सर्व वल विविजं गी वरु दित्या रु वरु क न
 ॥ न वयो वन संयन्ता न मरु स्रु स्रु दनी ॥ ॥ थुति महा कुरु यजा ॥ ॥ थन द वी रु
 आवाहन स्वा न जाय या य म रु ॥ उं ह्रीं अ ४ दा नी की महा य रु ॥ धे द न २ सर्व या
 यानां निमं दी य रु नि य व र नी
 रुय ॥ ॥ उं न द न म टि कि नं का ॥ आगदु २ रुट स्वाहा ॥ वा न ३ वा स्यं ता व ता
 रु स्य हं का न य विन कं स म य स त्वं रु व ल पी ॥ भय वि ल लि ता स न रु ॥ गो व व रु म
 नृय म स्रु व नृ या सर्वा लं का व रु पि ता म हा पृ थं क वा न ला क रु द स्य ॥ य रु धी रु व द ना

पंचपुत्रकीजामहासर्वीहानीमहायज्ञनीरावयक ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ श्रीहानीनीयवस्काया ॥
 यम्येयममनंयोरुमनंयतिदुस्वादा ॥ ॐ वजां कुंठज ॐ वजां पांशो ॐ वजां स्फोटवेंड
 वजावहादा ॥ ॥ धृं कथवाक् ॥ श्रीमहादानतियकनीसर्वविद्यायां नमा
 लंकनधामकं ॥ ॥ शिष्यानामनूकपार्थयमा
 कंयुजनायत्र ॥ ॥ रुमरुकास्यरुग
 वत्येष्टदं कर्तुमर्हसि ॥ ॥ समन्वाहयं कुरुमां वृद्धा
 : रुगदर्थक्रियार्थदा ॥ ॥ हलस्तोत्राधिसत्वाश्चक्रावन्त्यामरुदवता ॥ ॥ देवतालोकपालाश्च
 रुता ॥ ॥ सन्नाधिसासिता ॥ ॥ सासनाहिनतासत्वाः ॥ ॥ एकविंशजवक्रुषा ॥ ॥ ग्रहं महावतीयक

श्रीकदयमधुलं ॥ ॥ कविष्ठासिद्धगद्वययथाशक्तायवात्ररु ॥ ॥ अमकंयामयादा ॥
 यमद्विष्यस्यरुमम ॥ ॥ मधुलंसहितमर्वसानिधेकं कर्तुमर्हथ ॥ ॐ श्रीहानीनीवज्रधृ
 येयतिदुस्वादा ॥ ॥ आवाहनमरु
 ॥ ॐ हानीनीमहायज्ञे ॥ ॐ हानीनीमहायज्ञे ॥ ॐ हानीनीमहायज्ञे ॥ ॐ हानीनीमहायज्ञे ॥
 निमहीयकनीयवहानी ॥ ॥ रुद्र
 स्वादा ॥ ॥ निमरुष्टं यायवाक् ॥ ॐ अथमम
 रुलं रुमस रुलं रु विमं वम ॥ ॥
 समयं सर्ववृक्षानां रु विना दंत संशय ॥ ॐ
 विवर्त्तकविष्ठासिवाधिविहकचरुसा ॥ ॥ रुथागताकलात्यहिममानुष्यनसंशय ॥
 अस्यामविवस्वादिद्यायसमविवस्वादिदि ॥ ॐ अत्रुद्रवधूयतां सर्ववृक्षं निमरुष्टं रु

वडधय ॥ मृचाकयकसघं वियमालसासघं विय स्वांककयासकस्यानं विय सलीवा
सम्रयविय थापिंय ३ यागुं पुसादे विय नासिय सकसांजा नाडा न हाऊन यायभा
कसिद्धिकाथ दवयाकमरुवि यमा थापिंय यमालसा झाडे थथ नाखा
य दकु सायाक यमा दकु न मदकसा मृचाल ॥ ॥ ० ॥ तिथीदावती
पूजाविधिसमाफं गुहं ॥ ० ॥ सम्वत् २२० म्कि दालुगक २२ यरु १ स
सिद्धयकादीनकुली ॥ लिखीतं ॥ दिटिदालकाथ वाहालया थीवजा वार्य यागपाल
यदकु न यदकु हं माजादीनं जगहवन् । कसुवें कसतां दव पुसीर यवमयवं ॥ २३० ॥